UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –33-37

"विद्यालयीन शिक्षा एवं समाजीकरण की प्रक्रिया"

डॉ प्रेमलता तिवारी
प्राध्यापिका, जवाहरलाल नेहरु शा.मा.वि. बड़वाह

सारांश :–
सामाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो नवजात शिशु को सामाजिक प्राणी बनाती है। इस प्रकृिया के अभाव में व्यक्ति सामाजिक प्राणी नही बकन सकता। इसी से सामाजीक व्यक्तित्व का विकास हेाता है। सामाजिक –सांस्कृतिक विरासम के तत्वों का परिचय भी इसी से प्राप्त होता है। सामाजीकरण से न केवल मानव जीवन का प्रभाव अखण्ड तथा सतत रहता है, बल्कि इसी से मानवसोचित गुणों का विकास भी होता है और व्यक्ति सुसळय व सुसंस्कृत भी बनता है। संस्कृति का हस्तांतरण भी समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही हूता हैं समाजीकरण की प्रक्रिया के बिना व्यक्ति सामाजिक गुणों को प्राप्त नही कर सकता । अतः यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है।

प्रस्तावना

सामाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो नवजात शिशु को सामाजिक प्राणी बनाती है। इस प्रकृिया के अभाव में व्यक्ति सामाजिक प्राणी नही बकन सकता। इसीह से सामाजीक व्यक्तित्व का विकास हेाता है। सामाजिक – सांस्कृतिकक विरासम के तत्वों का परिचय भी इसी से प्राप्त होता है। सामाजीकरण से न केवल मानव जीवन का प्रभाव अखण्ड तथा सतत रहता है, बल्कि इसी से मानवसोचित गुणों का विकास भी होता है और व्यक्ति सुसळय व सुसंस्कृत भी बनता है। संस्कृति का हस्तांतरण भी समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही हूता हैं समाजीकरण की प्रक्रिया के बिना व्यक्ति सामाजिक गुणों को प्राप्त नही कर सकता । अतः यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है।

शैक्षिक समाजशास्त्र के विद्वान्'बोगार्ड्स' ने समाजीकरण की परिभाषा इस प्रकार दी है – समाजीकरण वहप्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति समाजिक कल्याण हेतु एक – दसरे पर निर्भर रहकर व्यवहार कना सीखते है और जिसके द्वारा सामाजिक आत्म ' नियंन्त्रण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सन्तुलित व्यक्तित्व का अनुभव प्राप्त करते है।

स्माजीकरण का कार्य समाज में रहकर ही सम्भव है, समाज से अलग रहकर नही यह व्यक्ति को सामाजिक परम्पराओं प्रथाओं रुढियों, मूल्यों, आदर्शो आदि का पालन करना और विपरीत सामाजिक परिस्थितियेां में अनुकूलन करना सिखता है। सूमाजीकरण द्वारा संस्कृति, सभ्यता और अन्य अनगिनत विशेषताएँ पीढी हस्ताान्तरित होती है। और जीवित रहती है।

समाज और बालक

पालन पोषण का तरीका, सहानुभूमि का स्तर एवं प्रकार सहकारिता, निर्देश, आत्मीकरण, पुरस्कार एवं दण्ड अनुकरण सामाजिक शिक्षण इत्यादि बालक के समाजिकरण की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण कारक है। बालक के समाजीकरण पर पालन पोषण का गहरा पप्रभाव पडता है। जिस प्रकार ाक वातावरण बालक को प्रारम्भिक जीवन में मिलता है तथा जिस प्रकार से माता पिता बालक का पालन पोषण करत`है उसी के अनुसार बालक में भवनाएँ तथा अनुभूतियॉ विकसित हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि जस बालक की देख रेख उचित ढंग से नही होती हउसमें समाज विरोधी आचरण विकसित हो जाती है। दुसरे शब्दों में बालक समाज विरोधी आचरण उसी समय करता है। जब वह स्वयं का समाज के साथ व्यसवस्थापन नही कर पाता इस दृष्टि उचित समाजीकरण के लिए यह आवश्यक है कि बालक का पालन पोषण ठीक प्रकार से किया जाए।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –33-37

सहानुभूति

पालन पोषण की भॉति सहानुभूति का भी बालक के समाजीकरण में गहरा प्रभाव पड़ता है। ध्यान देने की बात यह है कि शैशावस्था मे बालक अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पारिवार के अन्य सदस्यें पर निर्भर रहता हैं दूरसे शब्दों में अन्य व्यक्तियों द्वारा बालक की आवश्यक्ताआकें की पूरी की जाती है। यहॉ इस बात को ध्यान में रखना भरी आवश्यक है।

सहकारिता

व्यक्ति को समाज की सामाजिक बनाता है। दूसरे शब्दों में, समाज की सहकारिता बालक को सामाजिक बनाने में महत्पपूर्ण स्थान रखती है। जैसे –जैसे बालक अपने साथ अन्य व्यक्तियों का सहयोग पाया जाता है। वैसे – वैसे वह दूरसे लोगो के साथ अपना सहयोग भी प्रदान करना आरम्भ कर देता है। इससे उसकी सामाजिक प्रवृत्तियॉ संगठित हो जाती है।

निर्देश

सामाजिक निर्देशो का बालक के समाजीकरण में गहरा हाथ होता है। ध्यान देने की बात यह है कि बालक जिस कार्य को करता है उसके सम्बंन्ध मे वह दूसरे व्यक्तियें से निर्देश प्राप्त कराता है। दूसरे शब्दों में वह उसी कार्य को करता है। जिसको करने के लिए उसे निर्देश दिया जाता है। इस प्रकार हम देखते है कि निर्दश सामाजिक व्यवहार की दिश को निर्धरित करताहै।

आत्मीकरण

माता – पिता परिवार तथा पड़ोस की सहानुभूति द्वारा बालक में आत्मीकरण की भावना का विास ह ोता है। लोग बालक केसाथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते है उन्ही को बालक अपना समझ ने लगता है तथा उन्हीं के रहन सहन भाषा तथा आदर्शो के अनुसार व्यवहार करने लगता है।

सामाजिक शिक्षण

अनुकरण केअतिरिक्त सामाजिक शिक्षण का भी बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभव पड़ता हैं ध्यान देने की बात यह है कि सामाजिक शिक्षण का आरम्भ परिवार से होता है जहॉ पर बालक माता – पिता, भाई – बहन, तथा अन्य सदस्यों से खान पान तथा रहन सहन आदि के बारे में शिक्षा ग्रहण करता है।

पुरस्कार एवं दण्ड

बाले के समाजीकरण में पुरस्कार एवं दण्ड का भी गहरा प्रभव पड़ता जब बालक समाज के आर्दशो तथा मान्यताओं के अनुसर यवहार करता है। तो लोग उसकी प्रशंसा करते है साथ ही वह समाज के हित को दृष्टि में रखते हुए जब कोई विशिष्ट व्यहार करता है। तो उसे पुरस्कार भी मिलता है। इसके विपरीत जब बालक असामाजिक व्यवहार करता है। तो दण्ड दिया जाता है। जिसके भय से वह ऐसा कार्य फिर दोबारा नही करता है। स्पष्ट है। पुरस्कार एवं दण्ड का बालक के समाजीकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

बालकों का समाजीकरण करने वाले अन्य महत्वपूर्ण

बालक जन्म के समय कोरा पशु होता ह। जैसे – जैसे वह समाज के अन्य व्यक्तियों तथा सामाजीक संस्थाओं के सम्पर्क में आकर विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रियाओं में भग लेता हरहात ाहै। वैस – वैसे वह अपनी पाश्विक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण करते हुऐ सामाजिक आदर्शो तथा मूल्यों को सीखता रहता है इस प्रकार बालक के समाजीकरण की यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। बालक के समाजीकरण में उसका परिवार पडोंस स्मूल उसके साथी उसका समुदाय धर्म इज्यादि का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

परिवार

बालक के समाजीकरण के विभिन्न तत्वों में परिवार का प्रमुख सीान है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक बालक का जन्म किसी न किसी परिवार में ही होता है। जैसे जैसे बालक बडा हेाता जाता है। वैसे वैसे वह अपने माता पिता,

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –33-37

भाई बहनों, तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आते हुऐ प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता तथा सहयोग आदि अनेक सामाजिक गुणो को सीखता रहता है। यही नही वह अपने परविार में रहते हुऐ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से अपने परिवार के आदर्शो, मूल्यों रीति – रिवाजों परमपराओं तथा मान्यताओं एवं विश्वासों को भी शनैःशनैः सीखता है।

पड़ोस

पड़ोस भी एक प्रकार का बड़ा परिवार होता है। जिस प्रकार बालक परिवार के विभिन्न सदस्यों के साथ अन्त क्रिया द्वारा अपनी संस्कृति एवं सामाजिक गुणो का ज्ञान प्राप्त करता है ठीक उसी प्रकार वह पड़ोस में रहने वाले विभिन्न सदस्यों एवं बालको के सम्पर्क में रहते हुए विभिन्न सामाजिक बातो का ज्ञान प्राप्त करता रहता है। इस दृष्टि से यदि पड़ोस अच्छा है तो उसका बालक के व्यक्तित्व के विकास पर इच्छा प्रभाव पड़ेगा और यदि पड़ो खराब है तो बालके बिगडने की सम्भावना है। यही कारण है कि अच्छे परिवारों के लोग अच्छे पड़ोस में ही रना पसन्द करते है।

स्कूल

परिवार तथा पड़ोस के बद स्कूल एक ऐसा सीान है जहॉ पर बालक का समाजीकरण होता है। स्कूल में विभिन्न परिवारें के बालक शिक्षा प्राप्त करने आते ह। बालक इन विभिन्न परिवारें के बालक तथा शिक्षकों के बीच रहते हुऐ सामाजिक प्रतिक्रिया करता है। जिससे उसका समाजीकरण व्रीवगति से हाने लगता है। स्कूल में रहते हऐु बालक को जहॉ एक और विभिन्न विषयों की प्रत्यक्ष शिक्ष द्वारा सामाजिक नियामों रिति रिवाजों परम्पराओं मान्यताओं विश्वासों तथा आदर्शो एवं मूल्यों का ज्ञान होता है। इस दृष्टि से परिवार तथा पड़ोस की भॉती स्कूल भी बालक के समाजीकरण का मूख्य साधन है।

बालक के साथी

प्रत्येक बालक अपने साथयों के साथ खेलता है वह खेलते समय जाति पॉति, ऊँच – नीच तााि अन्य प्रकार के भेदभाव से ऊपर उठकर दूसरे बालको के साथ अन्त : क्रिया द्वारा आन्नद लेना चाहता है। इस कार्य में उसके साथी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

समुदाय

बालक के समाजीकरण में समुदाय अथवा समाज का गहरा प्रीाव होता है। प्रत्येक समाज अथवा समुदाय अपने अपने विभिन्न साधनों तथा विधियों के द्वारा बालक का समाजीकरण करना अपना परम कर्तव्य समझता है। इन साध्णनों के अन्तर्गत जातीय तथा राष्ट्रीय प्रथाऍ एवं परम्पराऍ मनोरंजन एवं रानीतिक विचरधाराऍ धर्मिक, कट्टरता, संस्कृति, कला, साहित्य, इतिहास, जातीय पूर्वधारणाऍ इत्यादि आती है।

धर्म

धर्म का बालक के समाजीकरण में महत्वपूर्ण योगदान है। हम देखते है कि प्रत्ये धर्म के कुठ संस्कार, परम्पराऍ, आदर्श तााि मूल्य होतो है। जैसे जैसे बालक अपने धर्म अथवा अन्य धर्मों के व्यक्तित्व एवं समूहों के सम्पर्क में आता जाता है। वैसै – वैसे वह उक्त सभी बातो को स्वाभविक रुप से सीखता है।

समाजीकरण में अध्यापक की भूमिका

अध्यापक भी बच्चे के व्यक्तिगत व सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल शिक्षा का एक औपचारिक साधन है तथा क्रमबद्ध रुप से बच्चे के समाजीकरण की प्रक्रिया को व्रीव गति प्रदान करत ाहै। वास्तव में स्कूल बच्चे को वहॉ से उठाता है जहॉ से उसका परिवार उसे छोड़ता है। अध्यापक शिक्षा के द्वारा बच्चे में वह सांस्कृतिक मूल्य पैदा करता है। जो इस समाज व संस्कृति में मान्य होताहै। स्कूल में खेल प्रक्रिया द्वारा बच्चे सहयोग, अनुशासन, सामूहिक कार्य आदि सीखते है। इस प्रकार स्कूल बच्चे में आधारभूम सामाजिक व्यवहार तथा व्यवहार के सिद्धान्तों की नीव डालता है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –33-37

इसके साथ शिक्षक के स्नेह, पक्षपात अच्छे और बुरे व्यवहार आदि का बच्चों पर प्रीाव पड़ता है। वह कक्षा और खेल के मैदान में साहित्यिक तथा सांस्कृतिक क्रियाओं में बालको के सामने सामाजिक व्यवहार के आदर्श प्रसतुत करता है। बालक अपने अनुकरण की मूल प्रवृति के कारण शिक्षकों के कार्यो आदतों औ र रीतियों का अनुकरण करता है। अतः यह अध्यापक का कर्तव्य बन जाता है। कि वह बच्चों के सामने आदर्श प्रस्तुत करें क्योंकि अध्यापक के कथनों तथा कार्यों की छाप बालक पर लग जाती है। समाजीकरण की प्रक्रिया को तेज करने के लिऐ शिक्षक निम्न कदम उठा सकता है।

1. उसे समय – समय पर अभिभावको से सम्पर्क सीापित करना चाहिए तथा मिल जुल कर बच्चे के विकास के सम्बन्ध में सोचना चाहिए।
2. बच्चे को सामाजिक संस्कृति व समाज में प्रचलित मान्यताओं का ज्ञन देना चाहीए।
3. बालको/छात्रों के सामने सामजिक आदर्श सीापित करवाना चाहीए।
4. बालको/छात्रों को स्कूल की परम्पराओं से परिचित करवाना चाहीए।
5. विभिन्न सामाजिक योजनाओं तथा सामहिक क्रियाओं में भाग लेने के लिए अबच्चों को प्रोत्साहित करना चाहीए।
6. स्कूल में विभिन्न परिवाररें से बच्चे आते है। उनकी संस्कृति भी भिन्न – भिन्न होती है। अतः अध्यापक को बच्चों में अन्त सांस्कृतिक भावना का विकास करना चाहिए।
7. अध्यापक को सहयोगियों, छात्रों तथा प्रधानाचार्य के साथ मानवीयसम्बन्ध सीापित करने चाहिए।
8. बालकों के साथ स्नेह तााि सहानुभूति का बर्ताव करना चाहिए।

इस प्रकार अध्यापक बच्चे के व्यक्तिगत व सामाजिक सम्बन्धें के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

बच्चे के समाजीकरण में माँ–बाप की भूमिका

समाजीकरण करने वाली संस्था के रुप में परिवार व मॉ/ बाप का महत्व वास्तव में असाधारण है। यह कहा जाता हैं कि मॉ के त्याग और पिता की सुरक्षा में रहते हुऐ बच्चा जो कुछ सीखता है। वह उसके जीवन की स्थायी पूॅजी होती हैं परिवार या घर को सभी सामाजिक गुणो का उद्गम स्थल माना गया है। यह प्रथम सामाजिक इकाई होती है। यह परिवार की होता है। जहॉ से बच्चा सामाजिक जीवन की शुरुआत करता है। बच्चा सबसे पहले परिवार में जन्म लेकर परिवार का सदस्य बनता है। उसका सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध आनी मॉ से होता है। मॉ उसे दूध पिलाती है। और तरह तरह से उसकी रक्षा करतीहै। बच्चे को नियमित रुप से खने पीने की पहनने की तथा रहने की सीख मिलती है। इससे बच्चे के मन में एक सुरक्षा की भावना पनपती है। जो उसके जीवन को स्थिर तथा दृढ़ बनाती है और आगे चलकर उसे उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायता देती है। मॉ अपने बच्चे का प्यार करती है परिवार के अन्य लोग भी उसे प्यार करते है । वे उसके साथ हॅसते बोलत है। बच्चा उनकी तरफ देखता है। उनके होठों को हिलाकर बाते करने की प्रक्रिया को बार बार देखता है। और फिर उसी की नकल उतारने का प्रयास करता है। इसी के परिणामस्वरुप भाषा का विकास होता है। बच्चा परिवार में गुड्डे – गुडिया का खेल खेलता गुड़िया के साथ वह उसी प्रकार का व्यवहार करता है। जैसे मॉ या बाप उसके साथ करते है वह उन्हीं की रतह उसे सुलाता खिलाता पिलाता यहाू तककि मारता पीटता तक हैं इन सब क्रियॉओं के माध्यम से बच्चेको दूसरों साथ व्यवहार करने तथा एक शिष्ट पद के अनुार काम करने की कला का ज्ञान होता है। यह एक महत्वपूर्ण सामाजीकगुण है। जो समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चे को अपने परिवार से प्राप्त होता है।

माँ– बाप की सामाजिक प्रतिष्ठा व घर का आर्थिक स्तर भी बच्चे कके समाजीकरण का एक मुख्यकारक है। सम्पन्न घरों के बच्चों में अधिकतर अपने को श्रेष्ठ मानने की भवना होती है। वे अधिकतर चुस्त, स्वस्थ व बोलने में व्यवहारकुशल होतो है। गरीब घरों क बच्चों में निर्धनता के कारण हीन भवना होती है। इसीलिए बनके सामाजिक समायोजन में भी कठिनाई आती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है। कि घर बच्चे के समाजीकरण का मुख्य

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –33-37

साधन है। अच्छे परिवार केबच्चे अधिकतर सुसंस्कृत व सभ्य बनतेह ं बुरे परिवार के बच्चे अधिकतर झगडालू असम्भ्रा वसमस्या बनते है।

समाजीकरण में खेल की भूमिका

जिस प्रकार कवि अपने आपको कविता लिखने से तथा गायक गाने से नही रोक सकता उसी प्रकमार बालक अपने आको खेलने से नही रोक सकमता। खेल को बच्चे की रख्नात्मक जन्मजात, आत्मप्रेरित, स्फूर्तिदायक स्वलक्षित तथा आनन्ददायक प्रवृत्ति कहा जाता है। अधिकांश खेलों में मुख्यतः साीियें की आवश्यकता होती है। इसीलिए उनका स्वभव मुख्यतः सामाजिक होता है। इसलिऐ खेल क्रियाओं द्वारा बच्चे में सामाजिक दृष्टिकोण का विकास होता है। अन्य बच्चों के साथ खेलने से बच्चे अपरिचित लोगों से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करना तथा उन सम्बन्धें से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करना सीखतें है। समहू द्वारा अपनाए जाने या उसमें लोकप्रिय होने पर बच्चे में सुरक्षा की भावना आत ैहै। जो समाजीकरण के लिए बहुत आवश्यक है। सामूहिक खेलो से आदान प्रदान की भवना का विकास होता है। कई खेल क्रियाओं में बच्चे अपने खिलौनो की दूसरो के साथ मिट बॉट कर खेलते है तथा अपने साथियों को भी ध्यान में रखते हुए अपनी इच्छाओं को टालना या उन पर नियन्त्रण पाना सीख लेते है। जो बच्चे दूसरे बच्चों के खिलौने छीनकर व्यं खेलते है। उन्हें शीघ्र ही यह पता चल जाता है। कि उनके इस प्रकार के व्यवहार से दूसरे बच्चे उनके साथ खेला पसन्द नही करते

यही नही झूठमूठ के काल्पनिक खेलों जैसे अध्यापक अथवा मॉ बाप की भूमिका निभाना आदि के माध्यम से बडों के प्र िजो कुठ भी उसमें शत्रुता की भवना होती है काफी कम हो जाती है। खेल बच्चे एक नेता के नेतृत्व में खेलते है इससे उनमें नेतृत्व व अनुसरण की भावना पैदा हो जाती हैं बच्चे एक दूसरे की भवनाओं का आदर करना सीख जाते है। दूसरों के वे गुण जो औरो द्वारासराहे जाते है। जिनके कारण वे नता कहलाए जाते है। बच्चों मे उन गुणों को अपनाने की इच्छा जागृत हो जाती है। समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करने के लिए शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य यह है कि वह बालक केमाता पिता से संम्पर्क स्थापित करनके उसकी रुचियों तााि मनोवृत्तियों के विषय मं ज्ञन प्राप्त करे एवं उन्हीं के अनुसार उसे विकति होने के अवसर प्रदान करें शिक्षक को चाहिए कि वह स्कूल में विभिन्न सामाजिक योजनाओं के द्वारा बालकों को सामूहिक क्रियाओ के सक्रिय रुप से भाग लेने के अवसर प्रदान करे इन क्रियाओं में भाग लेने से उसका समाजीकरण स्वतः हो जाएगा। बालक के समाजीकरण में स्वस्थ मानवीय सम्बन्धां का गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक को चाहिए ि कवह दूसरे बालको शिक्षकाकें तााि स्कूल के प्रधानचार्य के साथ स्वस्थ मानवीय सम्बन्ध स्थापित करें इन स्वथ मानवीय सम्बन्धें के स्थापित हो जाने से स्कूल का समस्त वातावरण सामाजिक बन जाऐगा।